टीबी के त्वचा-परीक्षण से टीबी नहीं हो सकता।

लेटन्ट टीबी इन्फेक्शन - अप्रकट टीबी संक्रमण (एलटीबीआई)

लेटन्ट टीबी इन्फेक्शन - अप्रकट टीबी संक्रमण (एलटीबीआई) क्या है?

अप्रकट टीबी संक्रमण (एलटीबीआई) वाले व्यक्ति ने टीबी के जीवाणुओं को साँस में तो ले लिया है, मगर वह बीमार नहीं है क्यों कि उस के प्रतिरक्षा तन्त्र (इम्युन सिस्टम) ने टीबी के जीवाणुओं को बढने से और फैलने से रोक रखा है। टीबी के जीवाणु शरीर में जीवित तो हैं, परन्तु सो रहे हैं (सुषुप्त हैं)। वर्ल्ड हेल्थ ओर्गेनाइज़ेशन (रूह्यश्र) के अनुमान के मुताबिक विश्व की एक तिहाई जनसंख्या टीबी के जीवाणुओं से संदूषित है और उन्हें ए लटीबीआई है।

जिन्हें एलटीबीआई है, वे:

- बीमार नहीं हैं
- उन्हें कोई लक्षण नहीं है
- वे दूसरों में टीबी के जीवाणुओं को नहीं फैला सकते
- वे काम पर या शाला में जा सकते हैं और अपना प्रतिदिन का सामान्य कार्य कर सकते हैं
- खास कर के यदि उन का प्रतिरक्षा तन्त्र कमज़ोर हुआ तो उन्हें भविष्य में सक्रिय टीबी रोग हो सकता है।

जिन्हें एलटीबीआई हो वैसे १० व्यक्तिओं में से एक को भविष्य में कभी भी सक्रिय टीबी होगा। इन जीवाणुओं से संदूषित होने के २ साल के अन्दर अन्दर यह ख़तरा भारी रहता है।

आप का एलटीबीआई का परीक्षण कैसे होता है?

आप के शरीर में टीबी के जीवाणु हैं या नहीं यह जानने के लिये एक डॉक्टर या नर्स टीबी का त्वचा-परीक्षण करते हैं। टीबी प्रोटीन्स वाला परीक्षण-प्रवाही एक छोटी सी सूई के ज़रिये चमडी के नीचे डाला जाता है। अगर आप टीबी के जीवाणु से संदूषित हैं तो जहां प्रवाही डाला गया था उस जगह पर ४८ से ७२ घंटों के अन्दर सूजन हो सकती है और वह सख़्त महसूस होती है (इन्ड्युरेशन)। फिर यह सुनिश्चित करने के लिये कि आप को सक्रिय टीबी रोग तो नहीं है, और ज़्यादा परीक्षण किये जाते हैं, जैसे कि छाती का एक्स रे और शारीरिक जाँच। कुछ ख़ास परिस्थितिओं में, एलटीबीआई को परखने के लिये, डॉक्टर इन्टरफेरोन-गामा रीलिज़ एसे (आइजीआरए) नामक खून के परीक्षण की सलाह देते हैं।

टीबी के त्वचा-परीक्षण से टीबी नहीं हो जाता। यदि किसी ने बीसीजी का टीका लगवाया हो या गर्भवती हो, तो वे भी टीबी का त्वचा-परीक्षण करवा सकते हैं। ऐसे लोग जिन्हों ने सक्रिय टीबी वाले इन्सान के सम्पर्क में काफ़ी समय बिताया हो उन का टीबी का त्वचा-परीक्षण मुफ़्त में किया जाता है।

क्या एलटीबीआई के लिये चिकित्सा है?

एलटीबीआई को टीबी रोग में बदलने से रोकने के लिये डॉक्टर टीबी की दवा लिख दे सकता है। ये दवायें अपने मरीज़ों को देने के लिये डॉक्टरों को नि:शुल्क दी जाती है।